बाइबल अध्ययन I

व्यावहारिक बाइबल अध्ययन I: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

सत्र #१:

I. खंड #१: फिलि. १:१,२

II. खंड #२: फिलि. १:३-११

सत्र #२:

III. खंड #३: फिलि. १:१२-२६

सत्र #३:

III. खंड #३ (जारी.): फिलि. १:१२-२६

IV. खंड #४: फिलि. १:२७-२:१८

सत्र #४:

IV. खंड #४ (जारी.)

सत्र #५:

IV. खंड #४ (जारी.)

टिप्पणियाँ -

व्यावहारिक बाइबल अध्ययन I: परीक्षा

"प्रेरणिक बाइबल अध्ययन" पाठ्यक्रमों में अन्य पाठ्यक्रमों के समान परीक्षा नहीं होती है। परीक्षा के समय का उपयोग वास्तव में प्रेरणिक बाइबल अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

इस पहले "व्यावहारिक बाइबल अध्ययन" पाठ्यक्रम में, परीक्षा अवलोकन करने पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखती है, और व्याख्यात्मक प्रश्नों की भी आवश्यकता होती है। छात्र को बाइबल से एक गद्यांश दिया जाता है और वह उस परीक्षा के समय का उपयोग उस भाग का अध्ययन करने और अवलोकन और प्रश्न बनाने के लिए करेगा। छात्र को अपने सात सबसे महत्वपूर्ण अवलोकन और व्याख्यात्मक प्रश्न जमा करने होते हैं। अवलोकनों और प्रश्नों को महत्व, अंतर्दृष्टि, स्पष्टता आदि के अनुसार अंक दिया जाता है।

बाइबल अध्ययन I

टिप्पणियाँ -

पाठ्यक्रम परिचय:

पूर्व आवश्यकता: बाइबल अध्ययन का परिचय।

यह परिचयात्मक पाठ्यक्रम के बाद व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रमों में से पहला है। श्रृंखला उन सामग्रियों पर आधारित है जिन्हें उस पाठ्यक्रम में पढ़ाया गया था।

हम फिलिप्पियों की पुस्तक का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन की अपनी आधारभूत समझ का उपयोग करेंगे। हम फिलिप्पियों की पुस्तक का पहले ही अवलोकन कर चुके हैं और हमने पुस्तक का परिचय प्रस्तुत किया है।

इस पाठ्यक्रम का प्रारूप।

हम **फिलिप्पियों १:१-२:१८** का अध्ययन करेंगे। हम परिचय पाठ्यक्रम में विकसित की गई पुस्तक के आठ खंडों की रूपरेखा के अनुसार पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित करेंगे।

प्रत्येक खंड में अध्ययन के पाँच क्षेत्र होंगे:

१) एक संक्षिप्त परिचय।

२) वचन का अध्ययन (वुएस्ट्स वर्ड स्टडीज' और अन्य यूनानी संदर्भ सहायक सामग्री का उपयोग करते हुए)।

३) संरचना का अध्ययन (इसमें वह प्रक्रिया सम्मिलित होगी जो हमें अवलोकन से व्याख्या और उसे अनुप्रयोग करने की ओर ले जाती है)।

४) संरचना की रूपरेखा (हम प्रत्येक खंड के भागों के बीच संबंधों के प्रवाह को संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे)।

५) एक निष्कर्ष (इसमें गद्यांश का एक वाक्य सारांश विवरण और तीन या चार शब्द का शीर्षक सम्मिलित होगा जो गद्यांश का ध्यान आकर्षित करते हैं)।

***ध्यान दें: हम अपने अध्ययन में न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल का उपयोग करेंगे।

टिप्पणियाँ -

I. भाग #१ (फिलि. १:१, २)।

क. खंड #१ का परिचय। पौलुस परंपरागत रूप से अपने पत्रों को अपनी संस्कृति के पारंपरिक तरीके से आरम्भ करते हैं ।

१. भेजने वाले की पहचान (पद १क)।

२. प्राप्तकर्ताओं की पहचान (पद १ख)।

३. अभिवादन (पद २)।

ख. खंड #१ का शब्द अध्ययन।

१. पवित्र लोगों (पद १) - का अर्थ है जिन्हें अलग किया गया है (६२ में से ६१ बार यह बहुवचन रूप में है जो नए नियम में प्रकट होता है)।

२. अध्यक्षों (पद १) - का अर्थ है धर्माध्यक्ष; नए नियम में यह शब्द पासबान और प्राचीन का पर्याय है (यह भी ध्यान दें कि यह बहुवचन रूप में है)।

३. शान्ति (पद २) - का अर्थ है परमेश्वर के साथ सामंजस्य में होना।

ग. खंड #१ की संरचना का अध्ययन।

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) यीशु मसीह को दो पद्यों में तीन बार दोहराया गया है। वह आरम्भ से ही पुस्तक का स्पष्ट ध्यान केंद्रित करने वाला बिंदु है।

२) पौलुस स्वयं की एक दास (एक गुलाम) के रूप में पहचान देते हैं।

क) वह स्वयं की "पौलुस, तुम्हारी कलीसिया का संस्थापक" या "पौलुस, महान और प्रसिद्ध प्रेरित" के रूप में पहचान नहीं देते हैं।

ख) पौलुस ने मसीह के दास का जीवन जिया क्योंकि वह स्वयं को दास मानते थे।

टिप्पणियाँ -

ख. अनुप्रयोग।

१) आप स्वयं की क्या पहचान देंगे? क्या आप स्वयं को यीशु के दास के रूप में देखते हैं? या आप एक कर्मचारी के समान अधिक हैं? या आप मालिक के समान अधिक हैं? या आप एक अस्थायी, स्वयंसेवी कार्यकर्ता हैं?

२) दास न तो किसी चीज़ की अपेक्षा करते हैं और न ही कुछ कमाता है। उसका मालिक उसके जीवन को नियंत्रित करते हैं। क्या यह आपके स्वयं के विवरण के विरोध में है? क्या आप एक दास हो?

घ. खंड #१ की संरचना की रूपरेखा (इस मामले में परिचय देखें)।

ङ. खंड #१ का निष्कर्ष।

१. सारांश वाक्य। पौलुस फिलिप्पी वासियों को लिखते और अभिवादन के साथ आरंभ करते हैं।

२. शीर्षक। पता और अभिवादन।

II. खंड #२ (फिलि. १:३-११)।

क. परिचय। फिर से हम पौलुस की एक पारंपरिक प्रथा को देखते हैं।

१. सुसमाचार के प्रति उसके पाठकों की प्रतिक्रिया के लिए धन्यवाद के साथ प्रार्थना (उसकी पत्रियों के आरम्भ में)। देखें: रोमि. १:८; १कुरिं . १:४; कुलु. १:३; १थिस्स. १:२; २थिस्स. १:३; २तीमु. १:३; फिलेमोन ४।

२. पौलुस ने पहले प्रार्थना के विषय में सोचा।

ख. खंड #२ का शब्द अध्ययन।

१. भागीदारी (पद ५) - का अर्थ है कोइनोनिया; समान हित में बाँटना। हर कोई सम्मिलित है (यहाँ वित्तीय पहलू पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है: ४:१५ देखें)।

२. उसे पूरा करेगा (पद ६) - इसका अर्थ है उसे पूर्ण करेगा; उसे लक्ष्य पर लाएगा। इसमें वह प्रक्रिया सम्मिलित है जो किसी को पूर्णता की ओर ले जाती है (२:१२, १३ में पौलुस के बाद के उपदेश पर विचार करें जो इस धर्मविज्ञान का अनुप्रयोग होगा)।

टिप्पणियाँ -

३. सहभागी (पद ७) - का अर्थ है साझा करना; जो दूसरे के साथ कुछ साझा करते हैं। फिर से यूनानी शब्द "कोइनोनिया" का एक रूप है। कलीसिया एक देह है। यह एक साथ क्लेश सहती और विजयी होती है। मसीहियत एकल व्यक्तियों का नहीं बल्कि परमेश्वर के परिवार का धर्म है (देखें १ कुरिं. १२:२६)।

४. की सी प्रीति (पद ८) - का अर्थ है की सी आंतें; यह तरस की भावना को व्यक्त करने के लिए उपलब्ध सबसे ज़ोरदार यूनानी शब्द है। टिप्पणी: यह पौलुस की आंतें नहीं है बल्कि मसीह की आंतें है। पौलुस मसीह के इतने निकट रहा कि उसने दूसरों के प्रति उसके तरस को महसूस किया। वह फिलिप्पी वासियों के लिए यह तरस केवल इसलिए रख सकता था क्योंकि मसीह उसमें रहता था (गला २:२०)।

५. वास्तविक ज्ञान (पद ९) - का अर्थ है भरी हुई या पूर्ण अनुभवात्मक समझ।

६. परख (पद ९) - का अर्थ है नैतिक निर्णय; अंतर्दृष्टि; संवेदनशीलता। पद ९ में ये दोनों शब्द अधिक व्यावहारिक अनुभव की आवश्यकता की ओर संकेत देते हैं। फिर से, हम एक प्रक्रिया का विचार देखते हैं। वास्तविक प्रेम में वृद्धि और परिपक्वता की आवश्यकता होती है (१ थिस्स. ३:१२; ४:१०; २ थिस्स. १:३)।

७. भरपूर (पद ११) - इसका अर्थ है कि यह पूर्ण काल में है। यह पूर्ण अवस्था या स्थिति की ओर संकेत करते हैं। हमें पद ६ में "इसे पूर्ण करेगा" या "इसे पूरा करेगा" शब्द स्मरण दिलाए जाते हैं। यह हमें संरचना का अध्ययन करने के लिए एक महत्वपूर्ण सुराग देता है।

टिप्पणियाँ -

ग. खंड #२ की संरचना का अध्ययन।

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) हम इस खंड को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं; दूसरा भाग पहले भाग की व्याख्या करते हैं और उसे विस्तृत रूप से बताता है।

क) पौलुस उन्हें बताते हैं कि वह उनके लिए प्रार्थना करते हैं (पद ३-८)।

ख) पौलुस उन्हें बताते हैं कि वह उनके लिए क्या प्रार्थना करते हैं (पद ९-११)।

२) सबसे पहले पौलुस उन्हें बताते हैं **कि** वह उनके लिए निम्न घटकों के साथ प्रार्थना करते हैं:

क) धन्यवाद (पद ३)।

ख) आनन्द (पद ४)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस किस आधार पर धन्यवाद और आनन्द के साथ प्रार्थना करते हैं?

३) पौलुस दो चीजों (पद ५) **को देखते हुए** धन्यवादित और आनंदित है:

क) उनकी भागीदारी (पद ५): पौलुस एक ऐसा अगुवा नहीं है जो सब कुछ करना चाहता है जबकि अन्य कुछ नहीं करते हैं। वह आनन्द के साथ उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। वास्तव में, उनकी भागीदारी पौलुस का लक्ष्य है।

ख) परमेश्वर में उनका विश्वास (पद ६): पौलुस ऐसे अगुवे नहीं हैं जिन्हें सब कुछ नियंत्रित करने की आवश्यकता है ताकि वह मान सके कि सब कुछ पूरा हो जाएगा। जो कुछ उन्होंने आरम्भ किया, उसे पूरा करने के लिए परमेश्वर में विश्वास के माध्यम से, पौलुस के पास संदेह और भय के बजाय धन्यवाद और आनंद है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस इस विश्वास को रखने हेतु कैसे योग्य हैं?

टिप्पणियाँ -

४) पौलुस पद ७ में कहते हैं कि उसके लिए उनके विषय में ऐसा महसूस करना ही सही है **क्योंकि:**

क) उन्हें उनकी देखभाल और उनके लिए चिंता है (पद ७)।

ख) उनके लिए उनका प्रेम (पद ८)।

(१) किसी सेवकाई को छोड़ देना और उसके पूरा होने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने का अर्थ उस सेवकाई को भूल जाना नहीं है।

लेखक का उदाहरण:

यह एक प्रेमिका को छोड़ने जैसा नहीं है क्योंकि आपको दूसरी लड़की मिल गई है और वास्तव में मूल प्रेमिका से वैसे भी परेशान नहीं होना चाहते हैं। यह बच्चों को छूट देने जैसा है। हर माता-पिता को इसे कभी न कभी अवश्य करना चाहिए। यह दर्दनाक होता है। परिणाम बच्चे के प्रति एक गहरी लालसा होती है। फिर भी, यह बच्चे की अपनी भलाई के लिए किया जाता है।

अपना उदाहरण डालें:

टिप्पणियाँ -

(२) किसी सेवकाई को छोड़ना और उसके पूरा होने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना, उस सेवकाई को त्यागना नहीं है। परमेश्वर में विश्वास का अर्थ हमारा निष्क्रिय होना नहीं है। इसके विपरीत, यह हमारे काम की ओर संकेत देता है और उसकी ओर ले जाता है। फिलिप्पी में परमेश्वर क्या करेंगे (और कर रहे हैं) में पौलुस का विश्वास इस बात पर आधारित है कि परमेश्वर उसमें क्या कर रहे हैं (और करेगा)। पौलुस का प्रमाण (और इसलिए-उनका विश्वास) कि परमेश्वर फिलिप्पी में काम कर रहे हैं और उसकी देखभाल कर रहे हैं, वह देखभाल और करुणा है जो फिलिप्पी के लिए यीशु उनमें काम कर रहे हैं। पौलुस इसका भाग है। वह अपने विश्वास में सक्रिय हैं क्योंकि उनका विश्वास इस तथ्य पर आधारित है कि यीशु उनमें रहते हैं। उनका विश्वास उनके कार्यों से अलग नहीं है (जो उसमें यीशु के कार्य हैं - बर्तन धर्मविज्ञान)। पौलुस वह बर्तन हैं जिसके माध्यम से यीशु का स्नेह प्रकट होता है। पद ७, ८ में विश्वास का ध्यान उतना ही परमेश्वर पर केंद्रित है जितना कि पद ६ में है।

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप अन्य मसीहियों के साथ भाग लेते हैं या अकेले भाग लेते हैं? इसके अलावा, क्या आप दूसरों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और अनुमति देते हैं? क्या आप दूसरों को बढ़ते, सफल होते, और सेवकाई में फलदायी होते देखने की सच्ची इच्छा रखते हैं? या क्या जब कोई दूसरा विफल हो जाता है या जब उसकी सेवकाई को चोट पहुँचती है, तो आप चुपके से आनन्दित होते हैं?

२) क्या आप सेवकाई छोड़ने में सक्षम हैं? क्या आप दूसरों को अधिकार सौंपने और उसके पूरा होने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने में सक्षम हैं? या क्या आपको विश्वास की कमी है क्योंकि आपका ध्यान लोगों की क्षमता पर है न कि परमेश्वर की क्षमता पर? क्या आप नियंत्रण की भावना रखने के लिए हर चीज को पकड़ने का प्रयास करते हैं?

२. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) दूसरे स्थान पर पौलुस उन्हें बताते हैं कि वह उनके लिए **क्या** प्रार्थना करते हैं। वह प्रार्थना करते हैं कि उनका प्रेम बढ़े (पद ९)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

फिलिप्पी वासियों के प्रेम को बढ़ाने की आवश्यकता क्यों है?

टिप्पणियाँ -

२) **तक कि** (पद १०):

क) वे ईमानदार (अमिश्रित, शुद्ध) होंगे।

ख) वे निर्दोष होंगे (ठोकर नहीं)।

ग) वे मसीह के वापस आने के लिए तैयार होंगे।

व्याख्यात्मक प्रश्न

फिलिप्पी वासियों का प्रेम कैसे बढ़ता है?

३) **द्वारा होते** (पद ११):

क) धार्मिकता (परमेश्वर के साथ सही संबंध) के फल (प्रभाव या परिणाम) से भरपूर होते जाओ (पूर्ण काल पूर्णता को दिखाता है)। यह तरीका है। परमेश्वर के साथ संबंध में होने के प्रभावों या परिणामों से भरे होने से प्रेम बढ़ता है। दूसरों के साथ संबंध (प्रेम) परमेश्वर के साथ संबंध (प्रेम) द्वारा प्रभावित होता है (१ यूह. ४:१९ पर विचार करें)।

ख) यीशु मसीह के माध्यम से। यह वृद्धि का कारण या स्रोत है। वह हमारे लिए परमेश्वर के साथ एक सही संबंध में होना संभव बनाता है।

ग) परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए। यह वृद्धि का परिणाम है।

टिप्पणियाँ -

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आपको परमेश्वर के साथ संबंध के महत्व का एहसास है? यह मसीही जीवन का प्रारंभिक बिंदु है। क्या आपने दूसरों के लिए प्रेम में वृद्धि का अनुभव किया है? यदि नहीं, तो संभवतः आपको परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को सुधारने की आवश्यकता है।

२) जब हम परमेश्वर के साथ सही संबंध में होते हैं तो हमारे पास शान्ति और आनंद और धैर्य और दया होती है। हम दूसरों से प्रेम करने में सक्षम होते हैं। कई बार हमारा दूसरों से टकराव होता है। क्यों? क्योंकि हम स्वयं में संघर्ष कर रहे होते हैं। हम स्वयं से शांति में नहीं होते क्योंकि हम परमेश्वर के साथ सही नहीं होते हैं। दूसरों के साथ शान्ति स्थापित करने में सक्षम होने से पहले हमारी स्वयं के साथ शान्ति होनी चाहिए। ऐसा केवल परमेश्वर के साथ शान्ति के माध्यम से आता है। मैंने पाया है कि जिस समय मैं दूसरों से प्रेम करने में सबसे कम सक्षम होता हूँ, वह वो समय होता है जब मैंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया होता है। मैं दूसरों से प्रेम करने में सक्षम नहीं होता क्योंकि मैं परमेश्वर के साथ सही संबंध में नहीं होता हूँ (मेरे पाप के कारण)।

चर्चा का विषय

उन तरीकों पर चर्चा करें जिनसे आपने हाल ही में अपने जीवन में काम करते हुए इस गतिशीलता (परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध सीधे लोगों के साथ आपके सम्बन्ध से कैसे संबंधित है) को देखा है।

३. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) वाक्यांश **"मसीह के दिन तक"** पद ६ और १० में दोहराया गया है।

२) इस वाक्यांश की दोनों घटनाओं के संदर्भ में हम एक और दोहराव देख सकते हैं। **पूर्णता** का विचार पद ६ **("पूरा करेगा")** और पद १०, ११ **("सच्चे बने"** या परिपूर्ण और **"भरपूर होते")** में दोहराया गया है।

३) भाग २ (पद ९-११) भाग १ (पद ३-८) को स्पष्ट और निर्दिष्ट करते हैं। पहले पौलुस उन्हें बताते हैं कि वह उनके लिए इस विश्वास के साथ प्रार्थना कर रहे हैं कि परमेश्वर उनमें उस प्रक्रिया को पूरा करेंगे जो उसने आरम्भ की थी। फिर वह इस प्रक्रिया को समझाते हैं और निर्देश देते हुए बताते हैं वह उनके लिए क्या प्रार्थना करते हैं।

टिप्पणियाँ -

४) इन अवलोकनों को ध्यान में रखते हुए, हम इस खंड के दो भागों के बीच संबंध देख सकते हैं और हम निम्नलिखित प्रश्न पूछ सकते और उनके उत्तर दे सकते हैं।

व्याख्यात्मक प्रश्न

वह कौन सा अच्छा काम है जिसे पूरा किया जा रहा है? (पद ६)।

५) जिस अच्छे कार्य को परमेश्वर ने आरम्भ किया और वह उसे पूरा करेंगे वह प्रेम का कार्य है। यह प्रेम फिलिप्पियों में है। हालाँकि, हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि सारा अनौपचारिक ध्यान यीशु पर है।

क) हाँ, फिलिप्पियों में प्रेम को सिद्ध किया गया है। परन्तु यह कार्य परमेश्वर द्वारा किया जा रहा है: **"वह इसे पूरा करेगा"** (पद ६)।

ख) हाँ, यह देखभाल, तरस और प्रेम है जो फिलिप्पियों के लिए पौलुस में है। परन्तु वास्तव में यह **"मसीह का स्नेह"** (पद ८) है।

ग) हाँ, बढ़ा हुआ प्रेम फिलिप्पियों के धार्मिकता के फल से भरने का परिणाम है। परन्तु **"यह यीशु मसीह के द्वारा आता है"** (पद ११)।

(१) यहाँ फिर से, हम **"बर्तन धर्मविद्या"** देखते हैं।

(२) फिलिप्पी वासी बर्तन हैं और मसीह सामग्रियाँ है। फिलिप्पी वासी यंत्र हैं और मसीह स्रोत है।

ख. अनुप्रयोग।

१) मसीही एक प्रक्रिया में सम्मिलित हैं। हमें इसका अहसास होना चाहिए और धैर्य रखना चाहिए। साथ ही हमें आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। हमें यह विश्वास से करना चाहिए। विश्वास किस में या किस पर? स्वयं में? नहीं! हमारा विश्वास परमेश्वर में होना चाहिए। उन्होंने प्रक्रिया आरम्भ की है (पद ६)। वह प्रक्रिया में हमारी अगुआई करेंगे। वह प्रक्रिया समाप्त करेंगे। **"मसीह यीशु के दिन"** (पद ६, १०) पर वह इसे पूरा करेंगे (देखें १ कुरिं. १:८; ५:५; २ कुरिं. १:१४)।

टिप्पणियाँ -

२) क्या हम इस प्रक्रिया के प्रति सचेत हैं? क्या कोई वृद्धि है? क्या हम धैर्यवान हैं? क्या हम उस विश्वास को पाना चाहते हैं जो परमेश्वर को शुक्रवार को क्रूस पर प्रक्रिया आरम्भ और रविवार को पुनरुत्थान पर समाप्त करने देगा **जबकि** हम शनिवार को प्रक्रिया के दौरान प्रतीक्षा करते हैं?

घ. **खंड #२ की संरचना की रूपरेखा** (रूपरेखा का उपयोग करके, छात्रों को भागों के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए चुनौती दें)।

१. पौलुस की उनके लिए प्रार्थना की घोषणा (पद ३-८)।

क. धन्यवाद और आनन्द के साथ (पद ३, ४)।

१) धन्यवाद और आनन्द का आधार: उनकी भागीदारी (पद ५)।

२) धन्यवाद और आनन्द का आधार: विश्वास (पद ६)।
विश्वास का आधार: उनकी देखभाल और उनके प्रति प्रेम यीशु के स्नेह और उनके प्रति तरस के कारण उत्पन्न हुआ (पद ७, ८)।

२. उनके लिए पौलुस की प्रार्थना की सामग्री (पद ९-११)।

क. उनके प्रेम के बढ़ने के लिए (पद ९)।

१) वृद्धि का उद्देश्य (पद १०)।

२) वृद्धि की विधि (पद ११क)।

३) वृद्धि का कारण (पद ११ख)।

४) वृद्धि का परिणाम (पद ११ग)।

ङ. **खंड #२ का निष्कर्ष।**

१. सारांश वाक्य। फिलिप्पी वासियों पर प्रेरित पौलुस का आनन्द उस प्रार्थना में व्यक्त होता है जो उनके विश्वास पर आधारित है कि परमेश्वर उनके जीवन में क्या कर रहे हैं और क्या करेंगे (अर्थात, वह उनमें उस प्रेम को पूरा करेगा जिसे उसने आरम्भ किया था)।

२. शीर्षक। आनन्दमय प्रार्थना।

टिप्पणियाँ -

III. खंड #३ (फिलि. १:१२-२६)।

क. खंड #३ का परिचय।

१. इस गद्यांश में, आनन्द के विषय पर ज़ोर दिया गया है।

२. पौलुस का **असीमित** आनन्द **गहरे संबंध** की स्थिति के माध्यम से प्रकट होता है।

३. पौलुस बंदीगृह में होते हुए भी सच्चा आनन्द व्यक्त करते हैं।

ख. खंड #३ का शब्द अध्ययन।

१. प्रगति (पद १२) - का अर्थ है अग्रिम; आगे बढ़ते हुए। इस शब्द का उपयोग आमतौर पर पहली पंक्ति में लकड़ी काटने वालों की आगे बढ़ती सेना के कार्यों के लिए किया जाता था जो सामान्य सेना से आगे निकल जाते थे। वे एक अभेद्य जंगल के बीच से रास्ता निकाल देते थे ताकि सेना आगे बढ़ सके। यहाँ, पौलुस आगे बढ़ते हुए सुसमाचार की उन्नति की बात कर रहे हैं। वह सुसमाचार को वहाँ ले जाने की बात कर रहे हैं जहाँ वह पहले नहीं गया।

२. प्रगट हो गया है (पद १३) - का अर्थ है अज्ञात को ज्ञात करना; यहाँ हम फिर से प्रथम अन्वेषक द्वारा जोर देते हुए देखते हैं।

३. हियाव बाँध कर (पद १४) - का अर्थ है आत्मविश्वास होना; मनाने के लिए। पौलुस के उदाहरण से मसीहियों का भरोसा बढ़ा।

४. झगड़े (पद १५) - का अर्थ है स्वयं चाहने वाला पक्षपात; विभाजनकारी। मुकाबला कभी-कभी कलीसिया की संगति और संस्थाओं के बीच सेवकाई के लिए एक उद्देश्य को लेकर होता है।

५. ठहराया गया (पद १६) - का अर्थ है किसी चीज के लिए सौंपा गया या नियुक्त किया हुआ। पौलुस हमेशा अपनी स्थिति और परमेश्वर की संप्रभुता के बीच एक मजबूत संबंध बनाते हैं।

६. बहाने से (पद १८) - का अर्थ है गुप्त उद्देश्य; झूठा कारण या उद्देश्य। तात्पर्य यह है कि आप अपने हितों के लिए मसीह का उपयोग करते हैं।

७. आशा (पद २०) - इसका अर्थ है कि यह शब्द तीन अन्य शब्दों से आया है: दूर, मुखिया और देखना। इस शब्द को एक पहरेदार का अपने सिर को उठाकर देखते हुए वर्णित किया जा सकता है। उनका ध्यान एक चीज़ पर है। यहाँ हम पौलुस के आनन्द का रहस्य देखते हैं। कैसी भी परिस्थिति रहीं, उन्होंने अपनी आँखें यीशु पर केंद्रित रखीं।

टिप्पणियाँ -

८. बड़ाई (पद २०) - का अर्थ है बड़ा बनाना; ऊँचा उठाना।

९. जीवित रहूँगा (पद २५) - का अर्थ है साथ में खड़ा होना; शब्द का तात्पर्य सेवा करना है।

१०. दृढ़ होते जाओ (पद २५) - यहाँ हम फिर से मसीहियत को एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं।

ग. खंड #३ की संरचना का अध्ययन।

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) इस खंड को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। दूसरा भाग पहले भाग की **निरंतरता** है। हम पौलुस के **निरंतर** आनन्द के आधार पर इस निष्कर्ष को बना सकते हैं। पद १८ में विभाजन किया गया है। पौलुस कहते हैं कि वह आनन्दित होते हैं। यह पिछले पद्यों को संदर्भित करते हैं। वह यह भी कहते हैं कि वह आनन्दित होंगे। यह निम्नलिखित पद्यों को संदर्भित करते हैं।

क) सुसमाचार की बड़ी प्रगति में आनन्दित होना (पद १२-१८)।

ख) उसके प्रत्याशित छुटकारे में आनन्दित होना (पद १८ग-२६)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस की कैद किस प्रकार सुसमाचार की बड़ी प्रगति का परिणाम बनती है?

टिप्पणियाँ -

२) पौलुस पद १३ **("यहाँ तक कि")** में अपना उत्तर देते हैं और उसे पद १४ **("और")** में जारी रखते है।

क) पद १३--प्रगति हो रही है क्योंकि अन्य लोग पौलुस के कारण से अवगत हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, रोमी सैनिकों के बीच एक प्रथम अन्वेषक कार्य किया गया, जिन तक पहुँचना बहुत कठिन होता। वे अब यीशु मसीह और सुसमाचार के विषय में जान गए थे।

ख) पद १४--प्रगति हो रही है क्योंकि पौलुस की कैद की वास्तविकता रोमी मसीहियों को परमेश्वर के वचन को साहस के साथ बोलने के लिए एक चुनौतीपूर्ण उदाहरण प्रदान करती है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

परमेश्वर के वचन को बोलने का क्या अर्थ है?

३) निम्नलिखित संरचना पर ध्यान दें:

पद १४ = बोलें ——— परमेश्वर का वचन

| |

पद १५ = प्रचार करें ——— मसीह

क) जैसे प्रेरित यूहन्ना के लिए सत्य है, पौलुस के लिए परमेश्वर का वचन मसीह है।

ख) वचन बोलना मसीह के विषय में बोलना है।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

रोमी मसीही मसीह का प्रचार क्यों कर रहे हैं?

४) सामान्य तौर पर, पद १४ इस प्रश्न का उत्तर देता है: क्योंकि पौलुस कैद में हैं। हालाँकि, हम पद १५ में अधिक विवरण पाते हैं:

क) कुछ पौलुस के प्रति डाह और झगड़े के कारण प्रचार कर रहे हैं।

ख) अन्य लोग पौलुस के प्रति भली इच्छा से प्रचार कर रहे हैं।

५) इन दो समूहों के उद्देश्यों की व्याख्या पद १६, १७ में मिलती है।

क) पद १६ - एक प्रेरित के रूप में पौलुस के अधिकार का ज्ञान कुछ लोगों को प्रेरित करते हैं। वे उसका काम जारी रखने के लिए प्रेम से प्रेरित होते हैं।

ख) पद १७ - अन्य लोग गुप्त उद्देश्यों और स्वार्थ के साथ काम कर रहे हैं। वे पौलुस को परेशान करने का प्रयास कर रहे हैं। यदि हम "डाह" और "झगड़े" शब्दों के अर्थ और तात्पर्य के साथ-साथ अध्याय ३ में यहूदीवादियों के विरुद्ध सीधी चेतावनी पर विचार करें, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह यहूदीवादी समस्या का हिस्सा है। पौलुस की कैद उन्हें इस अर्थ में प्रेरित करती है कि यह एक कथित अवसर है। पौलुस के कैद में होने के कारण, वे व्यवस्था पर जोर देने हुए अधिक सरलता से सुसमाचार का प्रचार कर सकते हैं। वे सुसमाचार में रुचि रखने की तुलना में यहूदी धर्म की अपनी समझ को बनाए रखने में अधिक रुचि रखते हैं। वे स्वयं को लाभ पहुँचाने हेतु ("स्वार्थी महत्वाकांक्षा" - पद १७) सुसमाचार का उपयोग कर रहे हैं। उनकी एक छिपी हुई कार्यसूची है (जो कि पद १८ में "बहाने से" शब्द का अर्थ है)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस इस विषय (दूसरों में स्वार्थी महत्वाकांक्षा) में कैसा महसूस करते हैं?

टिप्पणियाँ -

६) पौलुस स्वयं यह प्रश्न पद १८ में पूछते हैं: **"तो क्या हुआ"**?

क) वह आनन्दित होते हैं क्योंकि मसीह का प्रचार किया जा रहा है। पौलुस इसके लिए जीवन जी रहे थे। यही उनका असली उद्देश्य और लक्ष्य था।

ख) और इसलिए वह आनन्दित होते हैं, भले ही इस लक्ष्य को पूरा करने वाले उसके विरुद्ध हों। वह अपने लाभों के लिए इसमें सम्मिलित नहीं हैं। वह इसमें मसीह के लिए है। वह अपने लाभों के लिए सम्मिलित नहीं हैं, वह मसीह के लिए सम्मिलित हैं। हम कह सकते हैं कि संदेश पौलुस के लिए माध्यम से बढ़कर है।

ख. अनुप्रयोग।

१) आपके सेवकाई सम्बंधित उद्देश्य क्या हैं? आप प्रचार या गवाही क्यों देते हैं? क्या यह् आपके लिए है? क्या ऐसा इसलिए है कि आपकी विशेष कलीसिया या संस्था बढ़ेगी? या कि यह यीशु के लिए है? क्या आप अपने उद्देश्यों के लिए मसीह का उपयोग करते हैं? या क्या आप यीशु को उसके उद्देश्यों के लिए आपको उपयोग करने देते हैं? आपको सेवकाई करने के लिए क्या प्रेरित करते हैं? मुकाबला? या कि मसीह का प्रेम और उसके राज्य को बढ़ते हुए देखने की इच्छा?

२) जो आपके साथ नहीं हैं, उनकी सेवकाई में सफलता के विषय में आप कैसा महसूस करते हैं? क्या आप चुपके से चाहते हैं कि उनकी सेवकाई नष्ट हो जाए? या क्या आप उससे आगे देख सकते और सुसमाचार की प्रगति में आनन्दित हो सकते हैं? क्या आप आनन्दित हो सकते हैं जब सुसमाचार उन तरीकों से आगे बढ़ता है जो आपके विरुद्ध हैं? आपका उद्देश्य क्या है? क्या ऐसा है कि मसीह आगे बढ़े? या यह है कि मसीह केवल तभी आगे बढ़े जब इससे आपको और आपकी सेवकाई को लाभ हो?

२. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) पौलुस भाग एक (पद १२-१८) में विवरण देते हैं कि वह **अब** किस बात में आनंदित है।

क) भाग दो (पद १८ग-२६) सामने आता है जब पौलुस ने कहा कि वह आनन्दित **होंगे।**

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस क्यों आनन्दित होंगे?

टिप्पणियाँ -

ख) वह **"के लिए"** (पद १९) आनन्दित होगा, वह जानता है कि उसके कारावास का परिणाम उसका **"उद्धार"** होगा।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस को कैसे छुटकारा मिलेगा?

२) यह दो चीजों **"के द्वारा"** (पद १९) और **"यही"** (पद २०) द्वारा पूरा किया जाएगा।

क) फिलिप्पियों की प्रार्थनाओं के **"द्वारा"**। पौलुस प्रार्थना की सामर्थ में विश्वास करते थे।

ख) पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य के **"द्वारा"**। पौलुस ने पवित्र आत्मा की सामर्थ पर भरोसा किया।

ग) उनके विश्वास **"के अनुसार"** ("अपेक्षा और आशा")। पौलुस विश्वास की सामर्थ पर विश्वास करते थे। वह समझ गये थे कि विश्वास छुटकारे (उद्धार) की ओर ले जाता है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस की अपेक्षा और आशा क्या है?
उसे किस बात पर विश्वास है?

टिप्पणियाँ -

३) उनकी अपेक्षा और आशा है **कि:**

क) वह मसीह को असफल नहीं करेंगे। वह जिस भी परिस्थिति में हैं, वह उसके लिए साहसिक रहेंगे।

ख) वह मसीह को ऊँचा करेंगे।

(१) पौलुस का सारा ध्यान मसीह के लाभ पर है। वह अपने लाभ पर ध्यान नहीं देते । कैद में रहते हुए भी वह परमेश्वर की ओर केवल उस दृष्टि से नहीं देखते कि परमेश्वर उनके लिए क्या कर सकते हैं। वह परमेश्वर की ओर इस पर ध्यान केंद्रित करके देखते हैं कि मसीह के लिए क्या किया जा सकता है। उनका विश्वास इस बात पर विश्वास करने से परे है कि परमेश्वर उनके लिए क्या कर सकते हैं। वह यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उसके द्वारा मसीह की महिमा के लिए क्या कर सकते हैं।

(२) यह विश्वास भौतिक परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करते हैं। इसका अंतिम लक्ष्य भौतिक परिस्थितियों से परिभाषित नहीं होता। पौलुस अपने लिए अपने विश्वास का उपयोग नहीं करते। वह उसे मसीह के लिए उपयोग करते हैं।

ख. अनुप्रयोग।

१) जब आप किसी कठिन स्थिति में होते हैं तो आप अपने विश्वास का उपयोग किसके लिए करते हैं? असहज स्थिति से बाहर निकलने के लिए? क्या यही आपका ध्यान और प्रेरणा है? या क्या आपका विश्वास इतना शुद्ध है कि आप यीशु के लाभ पर ध्यान केंद्रित करते हैं, भले ही व्यक्तिगत रूप से आपके लिए परिणाम कुछ भी हो?

२) क्या आपके विश्वास का ध्यान इस बात पर है कि परमेश्वर आपको कैसे लाभ पहुँचा सकते हैं? या इस बात पर कि आप के लिए जो भी कीमत हो, मसीह को कैसे ऊँचा किया जा सकता है?

३) जब आपको कोई समस्या होती है तो क्या आपका पूरा विश्वास आपकी भौतिक परिस्थितियों पर निर्भर और इंगित करते हैं? क्या आपका मुख्य ध्यान समस्या को दूर करना है या क्या आपका विश्वास समस्या से परे है जो आपको दानि. ३:१८ और मत्ती २६:३९ के शब्दों से सहमत होने में सक्षम बनाता है?

टिप्पणियाँ -

३. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) पौलुस के विश्वास का केन्द्र बिन्दु मसीह को ऊँचा करना है। अधिक विशेष रूप से, यह कि मसीह को **"पौलुस की देह में"** ऊँचा किया जाएगा।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस की देह में मसीह को कैसे ऊँचा किया जा सकता है?

२) पौलुस दो संभावनाएँ देते हैं जब वह कहते हैं, "चाहे":

क) जीवित रहूँ।

ख) मर जाऊँ।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस वास्तव में अपनी मृत्यु को सकारात्मक रूप में कैसे देख सकते हैं?

ग) यह स्मरण रखना चाहिए कि पौलुस की रुचि स्वयं में नहीं है। वह पहले ही मर चुके हैं (गला. २:२०)। उनकी रुचि मसीह में है। वह किसी भी चीज़ का अनुभव करने के लिए तैयार हैं जो कुछ भी मसीह को ऊँचा करेगी।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस जब कहते हैं कि मेरा उद्धार होगा, तो उनका क्या अर्थ है?

टिप्पणियाँ -

३) पौलुस के लिए दो संभावनाएँ थीं।

क) मसीह के लिए कैद और उसकी ओर से साहसपूर्वक बोलना (इस तात्पर्य के साथ कि उसे छोड़ दिया जाएगा, जैसा कि पद २६ में देखा गया है)।

ख) मसीह के कारण के लिए कैद और उसकी ओर से साहसपूर्वक बोलना, और उसके लिए मार डाला जाना।

व्याख्यात्मक प्रश्न

जीवन और मृत्यु दोनों का अर्थ सच्चा उद्धार कैसे हो सकता है?

४) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर पद २१ में देते हैं, जब वह **"क्योंकि"** कहते हैं।

क) यह जीने के लिए उद्धार है क्योंकि वह मसीह में जीवन के द्वारा स्वयं का उद्धार पा चुके हैं (गला. २:२०)।

ख) यह मरने के लिए उद्धार है क्योंकि यह लाभ है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

यह (मृत्यु) कैसे लाभ है?

टिप्पणियाँ -

५) **"लाभ"** शब्द **"बहुत ही अच्छा"** (पद २३) वाक्यांश का पर्याय है। यह बहुत ही अच्छा (लाभ) है क्योंकि इसका परिणाम **"मसीह के साथ होना"** है। संरचना के निम्नलिखित आरेख से यह पता चलेगा कि यह हमारे प्रश्न का उत्तर है।

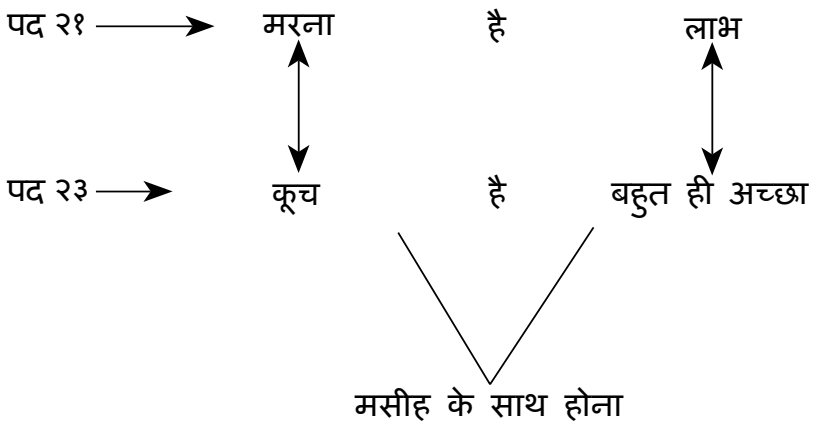

क) फिर से, पौलुस सब कुछ यीशु के साथ संबंध में तौलते हैं। अपने परिणाम के कारण मरना लाभ है। उनका परिणाम यीशु के साथ और सीधा या सिद्ध संबंध में होना है।

ख) किसी प्रकार मृत्यु में हम अपने शरीर के पुनरुत्थान से पहले भी यीशु के साथ अच्छे से अच्छे ढंग से रहेंगे (लूका २३:४३; २ कुरिं. ५:८ पर विचार करें)।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

"जीना मसीह" का परिणाम क्या है?

६) इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हम संरचना के दूसरे आरेख का उपयोग कर सकते हैं।

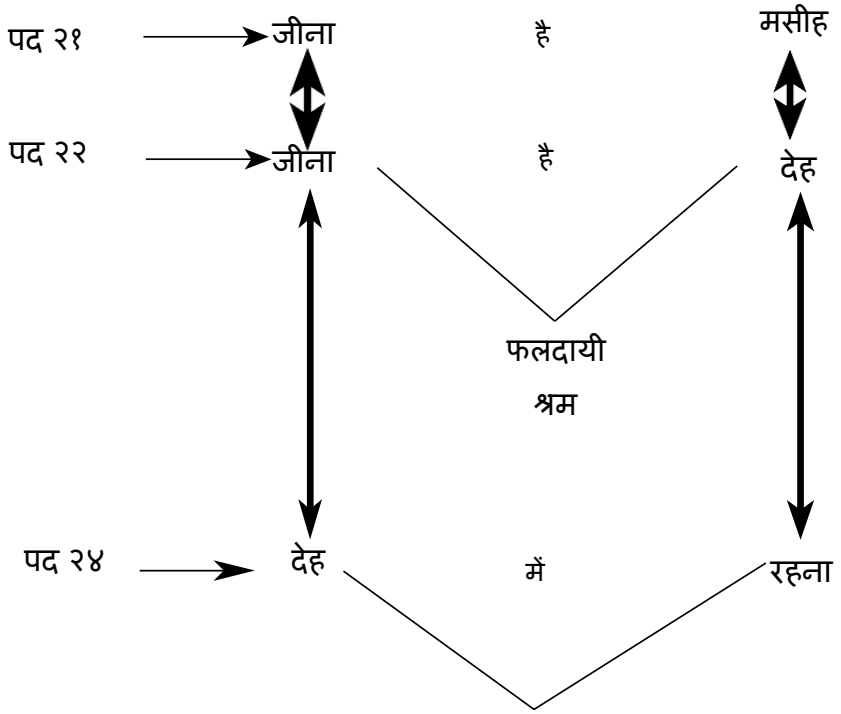

आपके लिए अधिक आवश्यक

(स्मरण रखें: पौलुस के शरीर में जीवन उसमें मसीह का होना है --गला. २:२०)

टिप्पणियाँ -

क) पौलुस का जीवन मसीह का जीवन है। परिणाम फलदायी श्रम है। अधिक विशेष रूप से पद २४ में, परिणाम दूसरों के लिए आशीषें और लाभ हैं।

ख) फिर से पौलुस स्वयं से दूसरी ओर इशारा करते हैं। वह अपने हितों या लाभों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं। पौलुस स्वयं के लिए मर चुके हैं। वह अपने जीवन के उपयोग को मसीह (सिर) या फिलिप्पियों (मसीह की देह) की ओर इंगित करते हैं।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस क्या सोचते हैं कि उनके साथ क्या होगा?

७) उन्हें विश्वास है कि वह जीएंगे ("**रहेंगे/जारी रखेंगे**")।

क) इस भाग (पद १८ग-२६) में पौलुस ऐसे दृष्टिकोण से आरम्भ करते है जो आगे देखते हैं और ऐसे दृष्टिकोण के साथ समाप्त करते हैं जो आगे देखते हैं।

ख) पौलुस अपनी परिस्थितियों से परे देखते और आनन्दित होने में सक्षम हैं। वह अपनी वर्तमान स्थिति पर स्थिर नहीं होते हैं।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस क्यों ऐसा विश्वास करते हैं कि वह जीवित रहेंगे?

८) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर पद २५ में देते हुए वह कहते हैं **इसलिये कि मुझे इसका भरोसा है।** उन्हें किस बात का भरोसा है? फिर से, हम संरचना का अध्ययन करते हैं (आरेख में अतिरिक्त चर "भ" **अधिक आवश्यक** को दर्शाता है)।

प. २४	रहना (भ)	तुम्हारे	कारण
प. २५	रहूँगा	तुम	दृढ़ होते जाओ

क) पौलुस आश्वस्त हैं कि उनके लिए मरने से **अधिक आवश्यक** (परमेश्वर की योजना में) जीना है। इस प्रकार, उन्हें विश्वास है कि वह जीवित रहेंगे।

ख) पौलुस का मानना है कि फिलिप्पियों को उसकी प्रेरितिक सेवकाई की अधिक आवश्यकता है। यह धारणा और परमेश्वर की संप्रभुता में उनका विश्वास इस निष्कर्ष को उत्पन्न करते हैं कि वह जीवित रहेंगे।

ग) फिर से हम देखते हैं कि पौलुस का ध्यान मसीह पर है। पद २६ में पौलुस अपने निष्कर्ष के उद्देश्य **(और जो)** की व्याख्या करते हैं। ध्यान मसीह पर केंद्रित है **(मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए)।**

घ) फिर से हम यह भी देखते हैं कि पौलुस का ध्यान दूसरों पर है। वह दूसरों की आवश्यकताओं को अपनी इच्छाओं और प्राथमिकताओं से आगे रखते हैं। जो चीज उसके लिए **अधिक बेहतर** है, वह उस चीज के लिए जुरमाना हो जाती है जो दूसरों के लिए **अधिक आवश्यक** है।

प. २३ →	क्योंकि यह (मरना) बहुत ही अच्छा है	←	स्वयं को प्राथमिकता
प. २४ →	(जीना) और भी आवश्यक है	←	दूसरों के कारण

टिप्पणियाँ -

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप मृत्यु को सकारात्मक रूप से देख सकते हैं? क्या आप जीवन को सकारात्मक रूप से देख सकते हैं? क्या आप इन दृष्टिकोणों में संतुलित हैं? पौलुस की मरने की इच्छा उसके जीने की इच्छा से संतुलित थी क्योंकि मसीह के लिए उसका प्रेम मसीह के लोगों के प्रति उसके प्रेम से संतुलित था।

२) आप क्यों मरना चाहते हो? क्या ऐसा इसलिए है ताकि आप जीवन की समस्याओं से बच सकें? या क्या आपके पास एक अच्छी इच्छा है जो पूरी रीति से यीशु के साथ रहने की आपकी इच्छा पर आधारित है? आप जीना क्यों चाहते हैं? क्या यह आपके लिए आपकी व्यक्तिगत आशाओं और इच्छाओं के कारण है? या क्या आप इसलिए जीने की इच्छा रखते हैं ताकि आप दूसरों के लिए आशीष बन सकें?

घ. खंड #३ की संरचना की रूपरेखा।

१. सुसमाचार की अधिक से अधिक प्रगति (पद १२-१८)।

क. दूसरों के माध्यम से पौलुस के कारण का ज्ञान (पद १३)।

ख. दूसरों के प्रचार के माध्यम से (पद १४-१८)।

१) पौलुस के प्रति अच्छे और बुरे उद्देश्यों से प्रेरित (पद १५)।

२) उन उद्देश्यों की व्याख्या (पद १६,१७)।

३) उन उद्देश्यों के प्रति पौलुस की प्रतिक्रिया (पद १८)।

टिप्पणियाँ -

२. पौलुस का छुटकारे का पूर्वानुमान करना (पद १८ग-२६)।

क. पौलुस आगे देखते हुए आनन्दित होने के साथ आरम्भ करते हैं (पद १८ग)। क्योंकि वह उद्धार को देखते हैं (पद १९क)।

१) उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा (पद १९ख)।

२) पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य के द्वारा (पद १९ग)।

३) अपने विश्वास के माध्यम से (पद २०क)।

क) कि वह मसीह को विफल नहीं करेगा (पद २०ग)।

ख) कि उसमें मसीह ऊँचा होगा (पद २०ग)।

(१) अपने जीवन के माध्यम से (पद २०घ)।

(२) उसकी मृत्यु के माध्यम से (पद २०घ)।

(क) इसकी सामान्य व्याख्या कि जीवन और मृत्यु दोनों "उद्धार" क्यों हो सकते हैं (पद २१)।

(ख) विशिष्ट स्पष्टीकरण (पद २२-२४)।

ख. पौलुस आगे देखते हुए आनन्द के साथ समाप्त करते हैं (पद २५, २६)।

लेखक की टिप्पणी:

रूपरेखा का उपयोग करते हुए, छात्रों को भागों (विस्तार, निरंतरता, विशेष विवरण, स्पष्टीकरण, कारण, विधि, निष्कर्ष) के बीच संबंधों की पहचान करने की चुनौती दें।

टिप्पणियाँ -

ङ. खंड #३ का निष्कर्ष।

१. सारांश वाक्य। परमेश्वर इस दुनिया की कथित कठिन परिस्थितियों को भलाई के लिए एक साथ काम करने का कारण बना सकते हैं परन्तु हमें मसीह के लिए किसी भी कीमत को सहने और भुगतान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

२. शीर्षक। नकारात्मक कैद के सकारात्मक परिणाम।

IV. खंड #४ (फिलि. १:२७-२:१८)।

क. खंड #४ का परिचय।

१. इस खंड में पौलुस कुछ सामान्य निर्देश और चुनौतियाँ देते हैं। उन पर पूरी बाइबल में संभवतः सबसे गहरे मसीह तार्किक गद्यांश द्वारा इंगित किया प्रकाश डाला गया है।

२. पौलुस इस गद्यांश का उपयोग एक महान उदाहरण के रूप में करते हैं कि फिलिप्पी वासियों को अपना जीवन जीने का प्रयास कैसे करना चाहिए।

ख. खंड #४ का शब्द अध्ययन।

१. चाल–चलन (पद २७) - का अर्थ है एक नागरिक का ढंग या आचरण; एक समूह के प्रति सदस्य का कर्तव्य। यहाँ विचार स्वयं को स्वर्ग के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में आचरण करने का है। पौलुस इस तथ्य पर बोलते हैं कि फिलिप्पी एक आधिकारिक रोमी "कालोनी" थी। वह उस क्षेत्र के नागरिकों के रूप में अपनी स्वर्गीय जिम्मेदारियों के महत्व को बढ़ाने के लिए रूपक का उपयोग करते हैं। यूनानी शब्द वर्तमान मध्य अनिवार्यता में है। वर्तमान अनिवार्यता आचरण के निरंतर और आभ्यासिक तरीके को इंगित करती है। बीच की आवाज इसे मानने के लिए एक उपदेश से अधिक बनाती है। यह व्यक्ति पर अधिक जिम्मेदारी डालते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति का एहसास करने और उचित कार्यों के लिए स्वयं को जवाबदेह ठहराने हेतु जिम्मेदार है।

२. योग्य (पद २७) - का अर्थ है तदनुसार; के साथ संगत। उन्हें अपने शब्दों को अपने व्यवहार के तदनुसार बनाना चाहिए।

३. स्थिर हो (पद २७) - का अर्थ है एक सैनिक के समान होना जो पीछे हटने से इंकार कर देता है। इस शब्द का यह अर्थ है कि विरोध है। योग्यता में साहस, हिम्मत और विरोध के बीच स्थिर प्रतिबद्धता सम्मिलित है।

टिप्पणियाँ -

४. एक चित्त होकर (पद २७) - इसका अर्थ है कि इस शब्द का प्रयोग खिलाड़ियों के एक दल के सहयोग का वर्णन करने के लिए किया गया था जो एक खेल प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के दूसरे दल के विरुद्ध मुकाबला कर रहे थे। पौलुस फिर से एक ऐसे शब्द का प्रयोग करते हैं जिसका अर्थ है कि एक विरोधी है। इस विरोधी के विरुद्ध संघर्ष को मसीही कर्तव्य की परिभाषा के संदर्भ में रखा गया है।

५. भय नहीं खाते (पद २८) - का अर्थ है चौंकना, भयभीत; एक चौंके हुए घोड़े का आतंक। हो सकता है कि पौलुस के दिमाग में कैसियस हो जब उसने इन शब्दों का उपयोग किया। इतिहास हमें बताता है कि फिलिप्पी की लड़ाई में, हार की संभावना से भयभीत होकर कैसियस ने आत्महत्या कर ली थी। यहाँ, पौलुस शत्रु को आपको डराने देने के खतरे के प्रति चेतावनी देते हैं।

६. चिह्न (पद २८) - का अर्थ है तथ्यों की अपील द्वारा प्राप्त प्रमाण (कानूनी भाषा)। यहाँ हमें पौलुस के प्रारंभिक बिंदु को याद दिलाया जा रहा है। यह शब्द उन क्रियाओं के व्यावहारिक परिणाम का परिचय देता है जो शब्दों के अनुरूप हैं।

७. हुआ (पद २९) - का अर्थ है कृपापूर्वक दिया गया। यीशु पर विश्वास करना और उसके लिए कष्ट सहना अनुग्रह का उपहार है।

८. के कारण (पद २९) - का अर्थ उसके स्थान पर है। इस प्रकार, हम मसीह के स्थान पर उन लोगों के रूप में क्लेश सहते हैं जो उसी संदेश का प्रचार करना जारी रखते हैं जिसने उसे क्रूस पर भेजा था। पौलुस इसे एक अवसर (एक कृपापूर्ण उपहार) के रूप में समझते हैं। मत्ती ५:११, १२; प्रेरितों के काम ५:४१; याकूब १:२; १ पत. ४:१४।

९. परिश्रम (पद ३०) - का अर्थ आंतरिक संघर्ष; एक खिलाड़ी के दर्द या पीड़ा की तस्वीर जो समापन रेखा की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहा है। पौलुस इस शब्द का प्रयोग संघर्ष के बीच अपनी सेवा के जीवन का वर्णन करने हेतु करते हैं (ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए प्रेरितों के काम १६:१९-४० पढ़ें)।

१०. यदि (२:१) - का अर्थ "क्योंकि" या "तथ्य को देखते हुए" के रूप में हो सकता है।

११. विरोध (२:३) - का अर्थ है संघर्ष; व्यक्तिगत और विभाजनकारी महत्वाकांक्षा। यहाँ फिर से पौलुस एकता की कमी की समस्या की ओर संकेत करते हैं।

१२. स्वरूप (२:६) - का अर्थ है एक दार्शनिक शब्द (किसी चीज़ के रूप या आकार में भौतिक शब्द नहीं)। यह अस्तित्व, सार, या उस सार की **अभिव्यक्ति** के प्रकार का प्रतीक है। यह एक सिद्ध सार की सिद्ध **अभिव्यक्ति** है। यह व्यक्ति के अंदरूनी स्वाभाव का बाहरी प्रकटीकरण है। अभिव्यक्ति अपने संगत स्वाभाव से अलग है जैसे प्रकाश अपनी संगत अग्नि से अलग है। वे समान नहीं हैं। फिर भी वे एक हैं। यदि कोई किसी चीज के स्वभाव को व्यक्त करते हैं तो इसका अर्थ है कि उस व्यक्ति का स्वभाव भी वैसा ही है।

टिप्पणियाँ -

१३. होकर (२:६) - एक वर्तमान सक्रिय कृदंत है; यह दर्शाता है कि कार्रवाई जारी है। यीशु ने कभी भी परमेश्वर होना बंद नहीं किया। उन्होंने केवल उस सार या प्रकृति को व्यक्त करने के विशेषाधिकार को एक ओर रखा। इन दो शब्दों (स्वरूप और होकर) की परिभाषाएँ उस विरोधाभास की व्याख्या प्रदान करती हैं जिसे हम त्रिएकता के रूप में जानते हैं।

१४. वश (२:६) - का अर्थ है हर कीमत पर रुकना। जो कुछ यीशु के पास था वह उसे छोड़ने के लिए तैयार था।

१५. शून्य (२:७) - का अर्थ है खाली करना; कोई प्रभाव न बनाने हेतु। अर्थात्, उसने अपने विशेषाधिकारों को एक ओर रखा। उन्होंने स्वयं को ईश्वरीय रूप में व्यक्त करने के अपने विशेषाधिकार को त्याग दिया।

१६. अपने आप को (२:७) - यूनानी में यह एक सशक्त स्थिति में है। उसने अपने आप को स्वयं से खाली कर लिया।

१७. स्वरूप (२:७) - वही यूनानी शब्द है जो पद ६ में है। यह सार का प्रकटीकरण है। इसका तात्पर्य अंदरूनी चरित्र और स्वाभाव के अस्तित्व से है।

१८. समानता (२:७) - का अर्थ है वास्तविक बाहरी समानता; भौतिक रूप।

१९. रूप (२:८) - अर्थात बाहरी रूप। यह शब्द एक राजा का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया था जो टाट के लिए अपने राजा के वस्त्र का आदान-प्रदान करते हैं। यह उसे इंगित करते हैं कि जो पूर्ण रूप से बाहरी है। यह एक आदमी का पहनावा या अनुभव है।

२०. अति महान् (२:९) - का अर्थ है दूसरों की तुलना में ऊपर और ऊँचे से भी परे होना; सर्वोच्च पद पर ऊँचा किया जाना।

२१. करते जाओ (२:१२) - का अर्थ है काम को पूरा करना; अंतिम निष्कर्ष तक जारी रहना (जो कि मसीह के समान होना है)। यह शब्द संकेत देता है कि एक प्रक्रिया है।

२२. डरते और काँपते (२:१२) - का अर्थ है सही काम करने के लिए घबराहट भरी चिंता; स्वयं में विश्वास की एक गंभीर और लाभदायक कमी जो एक चेतावनी के रूप में कार्य करती है। यह डर है जो किसी को अपनी अक्षमता को जानने से आता है। यह वास्तविकता का सम्मान है जो एक व्यक्ति को परमेश्वर पर भरोसा करने और उस पर निर्भर होने के लिए प्रेरित करते हैं।

२३. काम (२:१३) - का अर्थ है ऊर्जा देना। परमेश्वर कारक और कारण है। वह हमें चलाएगा।

टिप्पणियाँ -

२४. सुइच्छा (२:१३) - का अर्थ है भावनात्मक रूप से इच्छा करना।

२५. घमण्ड करने (२:१६) - का अर्थ है पकड़े रहना; दूसरे को भेंट चढ़ाना (प्रकाश होते हुए)।

२६. बहाना (२:१७) - पौलुस देवता का सम्मान करने के लिए एक प्याला लहू उँडेलने की मूर्तिपूजक प्रथा को संदर्भित करते हैं। वह अपनी प्रत्याशित शहादत को संदर्भित करने के लिए इस शब्दावली का उपयोग करते हैं।

२७. बलिदान (२:१७) - का अर्थ है बलिदान का बड़ा भाग। पौलुस की नम्रता उसे स्वयं को परमेश्वर के लिए बलिदान के छोटे भाग के रूप में देखने की अनुमति देती है।

२८. आनन्दित हो (२:१८, १९) - फिर से हम किसी चीज़ को बाँटने का विचार देखते हैं।

ग. खंड #४ की संरचना का संरचना अध्ययन।

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) इस खंड में पौलुस का लक्ष्य निर्देश देना और चुनौती देना है। इसे तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। तीनों भागों का सामान्य ध्यान इस बात पर है कि स्वयं का आचरण कैसे किया जाए।

क) **स्वयं का आचरण करो...(१:२७-२:२)।**

ख) कुछ न करो...(२:३-१३)।

ग) सब कुछ करो...(२:१४-१८)।

२) सुप्रसिद्ध मसीहतार्किक गद्यांश (२:३-१३) को सम्मिलित करने के लिए पौलुस का प्राथमिक कारण शिक्षा देना नहीं है। पौलुस इस गद्यांश को कि कैसे स्वयं का आचरण किया जाए, दो अलग-अलग उपदेशों के बीच में रखते हैं । वह इसे एक अन्य उपदेश के साथ प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार से पौलुस गद्यांश को सर्वोत्तम उदाहरण, दृष्टांत और आचरण के प्रकटीकरण के रूप में उपयोग करते हैं, जिसे वह चाहता है कि फिलिप्पी वासी इसका अभ्यास करें।

३) पहले भाग में (१:२७-२:२) पौलुस अपनी शिक्षाप्रद चुनौतियों का आरम्भ सामान्य तरीके से करते हैं। वह चाहते हैं कि फिलिप्पी वासियों का आचरण सुसमाचार के अनुरूप हो।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस उनके आचरण में यह **"चाल–चलन"** क्यों चाहता है?

४) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर **"कि चाहे"** शब्दों के साथ देते हैं।

क) ताकि वह उनके विषय में एक अच्छी रिपोर्ट सुन सके, भले ही वह उन्हें देख नहीं सकता।

ख) पौलुस, नियुक्त सेवा-कार्यकर्ता, उस सेवकाई के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करते हैं जिसे उसने आरम्भ किया था और वह उस सेवकाई में गंभीर रुचि दिखाता है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

इस **"चाल–चलन"** में क्या सम्मिलित है?

५) पौलुस तीन बिंदुओं की सूची देते हैं:

क) "**एक ही आत्मा में स्थिर हो"** (पद २७)।

ख) **"एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो"** (पद २७)।

ग) "**किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते"** (पद २८)।

६) इन तीन बिंदुओं के दो मुख्य विषय हैं:

क) एकता **("एक आत्मा"**; "**एक मन"**; "**आपके [समान] विरोधी")।**

ख) विरोधी के विरुद्ध संघर्ष **("स्थिर हो"** और **"एक चित्त होकर"** पर वचन अध्ययन पर ध्यान दें; **"विरोधियों"** शब्द के उपयोग पर भी ध्यान दें)।

टिप्पणियाँ -

७) इस प्रकार, **"चाल–चलन"** को दो विपरीत ढंग से परिभाषित किया गया है:

क) यह दूसरों के साथ एकता रखना है।

ख) यह दूसरों के विरोध में होना है।

८) पौलुस के लिए, इस दुनिया में मसीही जीवन परदेशी के सामान था। इसमें विरोध और युद्ध का सामना करना पड़ता है। सही प्रतिक्रिया (या आचरण का तरीका) शत्रु के **"विरुद्ध दृढ़ता से खड़ा होना"** है। उतना ही महत्वपूर्ण उन लोगों के **"साथ दृढ़ता से खड़ा होना"** भी है जिन्होंने इसी प्रकार के आचरण का उपयोग किया था।

९) **"आचरण का चाल–चलन"** जो **"सुसमाचार के योग्य"** है, का परिणाम है:

क) एकता का जीवन।

ख) विरोध का जीवन।

१०) यह सच है क्योंकि सुसमाचार ने प्रदान किया है:

क) परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेल (फिलि. १:२; यूह. १४:२७)। इस प्रकार, परमेश्वर के सभी बच्चों के बीच मेल है (इफि. २:१४-१८)।

ख) लोगों के बीच तलवार (मत्ती १०:३४-३६)।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

यह **"चाल–चलन"** क्यों है?

११) पौलुस ने **"तुम पर यह"** (पद २९) शब्दों के साथ अपने स्पष्टीकरण का परिचय दिया। यहाँ, वह कारण बताते हैं कि **"चाल-चलन"** में एकता और विरोध क्यों सम्मिलित हैं।

क) पद २७, २८ में आचरण के **"चाल-चलन"** में दो मुख्य विषय हैं।

ख) पद २९ में दो कारण हैं जो बताते हैं कि **"चाल-चलन"** में एकता और विरोध क्यों सम्मिलित हैं।

ग) संरचना के आरेख का अध्ययन करें।

"चाल-चलन" की परिभाषा (प. २७,२८)	स्पष्टीकरण/समीकरण (प. २९)
दूसरों के साथ एकता	उस पर विश्वास करने के लिए
दूसरों द्वारा विरोध	उसके हेतु क्लेश सहने के लिए
के लिए (मुख्य जोड़नेवाला शब्द)	

१२) सुसमाचार का स्वाभाव मसीही आचरण के **"चाल-चलन"** के भीतर विरोधी विषयों का कारण बनता है। सुसमाचार विश्वासियों के लिए उद्धार और अविश्वासियों के लिए एक ठोकर का प्रतिनिधित्व करता है। यह दो विपरीत समूहों के लिए दो विपरीत चीजों का प्रतिनिधित्व करता है।

क) परिणाम यह है कि मसीही आचरण के **"चाल-चलन"** में दो विपरीत विषय सम्मिलित हैं।

ख) निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें।

	उपदेश	आचरण का चाल-चलन
इफि. ४:१-६	"योग्य चाल चलो"	अपने समान विश्वास के कारण एकता में रहो
२ तीमु. ३:११,१२	"धर्मी जीवन व्यतीत करें"	सताव, क्लेश, विरोध

टिप्पणियाँ -

ग) हम यूहन्ना १५ में दिए गए उदाहरण का भी उपयोग कर सकते हैं। पद १७ में यीशु अपने शिष्यों को एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा देते हैं। फिर वह बताते हैं कि उन्हें दुनिया के लोगों द्वारा सताया जाएगा (पद १८-२१)। मसीही जीवन और आचरण के चाल-चलन में एकता और विरोध सम्मिलित होंगे।

व्याख्यात्मक प्रश्न

क्या यह **"चाल-चलन"** संभव है?

१३) हाँ! **"यदि"** शब्द का वास्तव में अर्थ **"चूंकि"** है।

क) पौलुस कह रहे हैं: चूंकि तुम्हारे पास ये चीजें हैं (२:१) तो उन्हें करो (२:२)।

ख) संरचना के निम्नलिखित आरेख में निरंतरता पर ध्यान दें।

"चाल-चलन" (१:२७-२८)	चूंकि तुम्हारे पास ये हैं (प.१)	इन्हें करो (प.२)
"स्थिर हो" "एक ही आत्मा में" "एक चित्त" "परिश्रम करते रहते हो"	"प्रोत्साहन/ढाढ़स" "आत्मा की सहभागिता" "करुणा" (शाब्दिक रूप से: क्लेश सहना)	"पूरा करो" "एक मन रहो" "एक ही चित्त" "एक ही मनसा रखो"

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप अपने आप को स्वर्ग का नागरिक मानते हैं? यदि हाँ, तो क्या आप केवल उस नागरिकता के विशेषाधिकारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं? या क्या आप अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करते और उस पर कार्य करते हैं? क्या जो आपके पास स्वर्गीय नागरिकता है, उसके लिए अपने जीवन के "चाल-चलन" को कर्तव्य के रूप में देखते हैं? क्या आपके काम उस सुसमाचार के अनुरूप हैं जिसका आप प्रतिनिधित्व करते और प्रचार करते हैं? या आप एक पाखंडी जीवन जी रहे हैं?

टिप्पणियाँ -

२) क्या आप इस तथ्य को स्वीकार कर सकते हैं कि मसीही जीवन में अपने भाइयों के साथ एक होना चाहिए और संसार के विरोध में खड़ा होना चाहिए? या क्या आप केवल परमेश्वर को "प्रेम" के रूप में देखते हैं और इसलिए सभी लोगों के साथ एक होना चाहते हैं? क्या आप इस तथ्य को स्वीकार कर सकते हैं कि सभी लोग भाई (परमेश्वर की संतान) नहीं हैं? क्या आप इस तथ्य को स्वीकार कर सकते हैं कि विरोध होगा?

३) आप मसीही क्लेश सहने को कैसे देखते हैं? क्या यह कुछ ऐसी बात है जिससे बचा जाए? क्या आप इसे शैतान के काम के रूप में तुच्छ समझते हैं? या क्या आप मसीह के लिए क्लेशों को अनुग्रहपूर्ण उपहार के रूप में स्वीकार कर सकते हैं?

२. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) इस बिंदु पर पौलुस अपनी शिक्षाप्रद चुनौती को जारी रखने का निर्णय लेते हैं। वह एक दृष्टांत का उपयोग करते हैं। वह यीशु के रवैये का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वह चाहते हैं कि फिलिप्पी वासियों का भी वैसा ही रवैया हो। यह उनके आचरण के **"चाल-चलन"** को प्रभावित करेगा। और इसलिए पौलुस पद ५ में लिखते हैं: "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।"

व्याख्यात्मक प्रश्न

"यह रवैया" क्या है?

२) "यह" पिछले दो पद्यों को संदर्भित करते हैं। यूनानी में पद ५ में "रवैया" शब्द पद २ में "मन" और "उद्देश्य" के समान शब्द हैं । पौलुस चाहते हैं कि फिलिप्पी वासियों का एक ही रवैया हो और पद २ में एक रवैये पर समान इरादा हो। पद ५ में वह फिर से उन्हें यह रवैया रखने के लिए कहते हैं। वह रवैये को परिभाषित करने और समझाने के लिए पद ३, ४ का उपयोग करते हैं (पद रवैये की परिभाषा पाते हैं। पद ४ में हम उस परिभाषा की व्याख्या पाते हैं। ५ के बाद के पद उस रवैये का सही उदाहरण देते हैं)। पद ३ में हम रवैये की परिभाषा पाते हैं। पद ४ में हम उस परिभाषा की व्याख्या पाते हैं।

टिप्पणियाँ -

३) पद ३ में रवैये की परिभाषा:

क) यह रवैया है जो **"विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ नहीं करता।"**

ख) यह रवैया है जो **"एक दूसरे को अपने से अच्छा मानता है।"**

४) पद ४ में रवैये की व्याख्या:

क) यह विभाजनकारी रवैया नहीं है। यह व्यक्तिगत लाभ पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है। विभाजनकारी रवैया मसीही एकता का शत्रु है। यह मसीही विरोध का मित्र है।

ख) यह एक रवैया है जो दूसरे व्यक्ति की आवश्यकताओं और रुचियों को स्वयं से अधिक महत्वपूर्ण मानता है। यह अपनी चिंता को दूसरों के प्रति निर्देशित करते हैं। यह एक ऐसा रवैया है जो दूसरों को प्राथमिकता देता है (देखें रोमी. १२:१०; गला. ५:१३; इफि. ५:२१; १ पत. ५:५)। यह रवैया मसीही एकता का मित्र है। यह मसीही विरोध का शत्रु है।

५) पद ३ का फिर से अध्ययन करें **"न करो"** और **"समझो"** के बीच में पौलुस हमें **"कैसे करें"** बताते हैं। केवल **"दीनता से"** हमारा यह रवैया हो सकता है। इसका शाब्दिक अर्थ है **"नीचा करना"**। केवल स्वयं को **"नीचे करने"** के साथ ही हम अपना ध्यान दूसरों पर केंद्रित कर सकते हैं। इस रवैये का परिणाम और उद्देश्य एकता में होना है।

टिप्पणियाँ -

६) संरचना के निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें।

	मत करो	करो
परिभाषा (प. ३)	स्वार्थी या खोखले अभिमान के साथ काम न करें	एक दूसरे को अपने से अधिक महत्वपूर्ण समझें
स्पष्टीकरण (प. ४)	केवल अपनी आवश्यकताओं/रुचियों का ध्यान न रखें	दूसरों की आवश्यकताओं और रुचियों का भी ध्यान रखें

व्याख्यात्मक प्रश्न

यह **रवैया** कैसे प्रकट हो सकता है?

७) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर हमें पद ५, ६ में बताकर देते हैं कि रवैया **"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था...जिसने..."** जिसने क्या किया? जब हम इस प्रश्न का उत्तर देंगे तो हम जानेंगे कि रवैये को कैसे प्रकट कर सकते हैं। इसे हम रवैये की विधि कह सकते हैं।

८) अगले तीन पद्यों में, हम मसीह के जीवन के माध्यम से रवैये की विधि को देखते हैं। इस विधि में चार बिंदु आते हैं।

क) स्वयं को खाली करना; अपने अधिकारों को नीचे करना (पद ६, ७)।

ख) विनम्रता (पद ८क)।

ग) आज्ञाकारिता (पद ८ख)।

घ) मृत्यु (पद ८ग)।

टिप्पणियाँ -

९) इन चार बिंदुओं के निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें।

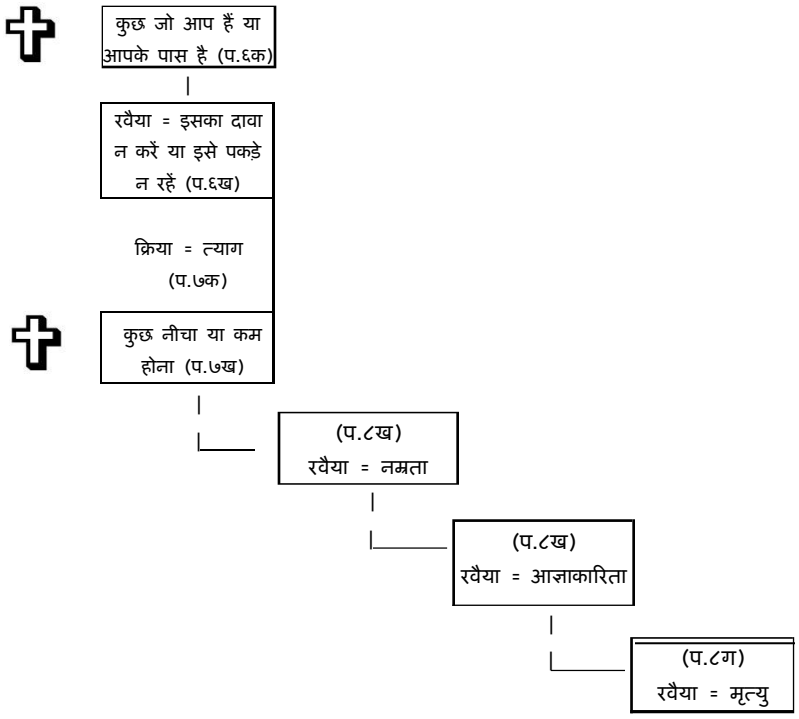

क) स्मरण करें कि पौलुस ने इसे पद ३ में **दीनता से** शब्दों को सारांशित किया था। इसका अर्थ है "स्वयं को नीचा करना।"

ख) यीशु ने अपने प्रभुत्व को व्यक्त करने के अपने अधिकारों को त्याग दिया। वह कुछ नीचे या कम हो गए।

व्याख्यात्मक प्रश्न

यदि यीशु मनुष्य बन गए तो क्या उन्होंने परमेश्वर होना बंद कर दिया?

१०) "स्वरुप" और "शून्य" शब्दों के वचन अध्ययन की समीक्षा करें।

क) "स्वरुप" अंदरूनी वास्तविकता या सार का बाहरी प्रकटीकरण है।

ख) "शून्य" अधिकारों या विशेषाधिकारों को त्यागना है।

टिप्पणियाँ -

११) यीशु ने अपने सार (उसकी "ईश्वरता") को व्यक्त करने के अपने विशेषाधिकार से स्वयं को खाली कर दिया। उन्होंने अपने आप को अपने प्रभुत्व से खाली नहीं किया। उन्होंने परमेश्वर होना बंद नहीं किया। उन्होंने प्रभुत्व के अपने बाहरी प्रकटीकरण (रूप) को रोक दिया और इसके बजाय एक बंधुआ सेवक के बाहरी प्रकटीकरण (रूप) को धारण कर लिया (देखें यूहन्ना १७:५ और २ कुरिं. ८:९)।

क) हमें "विद्यमान" शब्द (बेहतर अनुवादित "अस्तित्व में") के उपयोग से सहायता मिलती है।

ख) वह अभी भी उस प्रभुत्व को व्यक्त करने की क्षमता के साथ परमेश्वर के रूप में विद्यमान हैं, यीशु ने स्वतंत्र रूप से उस क्षमता को जाने देना (स्वयं को खाली) चुना। वह तब भी परमेश्वर थे जैसा कि "अस्तित्व में" शब्द की निरंतर प्रकृति से पता चलता है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

यदि यीशु ने परमेश्वर होना बंद नहीं किया था, तो क्या वह वास्तव में मनुष्य बन गए थे?

१२) फिर से, हमें "स्वरुप" शब्द की परिभाषा को समझना चाहिए। उन्होंने अपनी पहचान के बाहरी प्रकटीकरण को एक ओर त्याग दिया था (शेष वह जो था), और अन्य बाहरी प्रकटीकरण को स्वीकार किया (उस प्रकटीकरण का सार या प्रकृति बनना)।"स्वरूप" शब्द की परिभाषा के कारण (बाहरी प्रकटीकरण की वास्तविकता अंदरूनी स्वभाव के अस्तित्व को मानती है), हमें यह कहना होगा कि यीशु एक मनुष्य थे।

१३) इसके अलावा, शब्द "समानता" (पद ७ग) हमें दिखाता है कि वह केवल एक आदमी नहीं थे। वह एक आदमी से अधिक थे। हालाँकि, उनका शारीरिक रूप एक पुरुष जैसा था।

१४) अंत में, शब्द "रूप" (पद ८) हमें दिखाता है कि उन्होंने वही अनुभव किया जो एक आदमी अनुभव करता है। वह मनुष्य के समान ही थे।

क) **स्वरूप** - का अर्थ है मनुष्य की अभिव्यक्ति और स्वभाव।

ख) **समानता** - का अर्थ है मनुष्य की शारीरिक पहचान।

ग) **रूप** - का अर्थ है मनुष्य की अनुभवात्मक पहचान।

टिप्पणियाँ -

हाँ वह पूरी रीति से मनुष्य थे	परन्तु केवल मनुष्य नहीं	क्योंकि वह पूर्ण रूप से परमेश्वर थे और हैं
उन्होंने मनुष्य के स्वभाव के प्रकटीकरण को लिया (इस प्रकार मनुष्य होने के नाते)	उन्होंने प्रभुत्व के **प्रकटीकरण** के विशेषाधिकार को जाने दिया	उन्होंने प्रभुत्व होने को जाने नहीं दिया

१५) इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, **रूप**-परिवर्तन (या **रूपां**तरण) पर विचार करें। यह उसी यूनानी शब्द (स्वरूप) से आया है जिसकी चर्चा हम कर रहे हैं।

क) रूपांतरण (मत्ती १७:२) वास्तव में बाहरी प्रकटीकरण ("रूप" या "स्वरूप") में एक बदलाव ("परिवर्तन") था। यह फिलि. २ में जो हुआ उसका उलटा था। मत्ती १७ परिवर्तन में हम प्रभुत्व का बाहरी प्रकटीकरण देखते हैं (यह इस बात का प्रमाण है कि यीशु का प्रभुत्व अभी भी अस्तित्व में था)। मत्ती १७:७, ८ में हम एक और परिवर्तन देखते हैं। हम यीशु के बाहरी प्रकटीकरण को मनुष्य के रूप में देखते हैं।

ख) वह अपने प्रकटीकरण में आ-जा सकते हैं क्योंकि वह वास्तव में दोनों का पूर्ण स्वरूप है। प्रकटीकरण स्वभाव पर निर्भर है। स्वभाव प्रकटीकरण पर निर्भर नहीं है। इस प्रकार, यीशु के एक ही समय में दो स्वभाव हो सकते हैं, जबकि उनमें से केवल एक स्वभाव को बाहरी रूप से व्यक्त किया जा सकता है।

ग) यहाँ फिर से हम **"इस रवैये"** का हृदय देखते हैं। यह एक ऐसा रवैया है जो उस प्रकटीकरण को छोड़ने के लिए कि आप कौन हैं या जो आपके पास है उससे कुछ नीचे या कम प्रकटीकरण को लेने के लिए तैयार है। ध्यान दें कि इसका अर्थ यह नहीं है कि आप जो हैं उसे छोड़ दें। यह एक सच्ची और संतुलित देहधारण सेवकाई की कुंजी है। यह वह तरीका भी है जिससे हम वास्तव में **एक दूसरे को अपने से अधिक महत्वपूर्ण मान सकते हैं।**

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

इस **"रवैये"** के होने का क्या परिणाम है?

१६) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर पद ९ में परिवर्ती शब्द **इस कारण** के उपयोग के साथ देते हैं। परिणाम ऊँचा होना है।

क) हमारे यहाँ मत्ती २३:१२ का सिद्धांत सबसे चरम रूप में है। परम नम्रता का परिणाम सर्वोच्च होता है। अति ऊँचा किया जाना वाक्यांश का एक संबंधी अर्थ है। इसे आगे पद ९ख-११में समझाया और निर्दिष्ट किया गया है।

ख) संरचना के निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें।

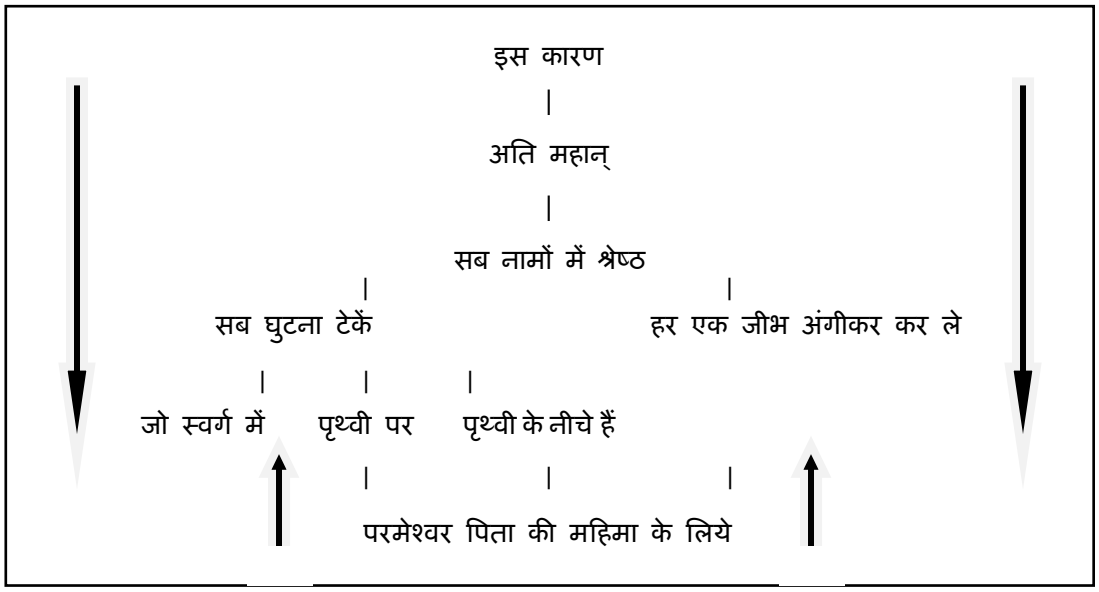

१७) इस रवैये का परिणाम ऊँचा होना है। इसकी विधि नम्रता है। इसका उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है। इन्हें अलग रखा जाना चाहिए। वे इस अर्थ में एक साथ हैं कि एक ही घटना के विभिन्न पहलू एक साथ हैं। फिर भी, उन्हें मिलाया नहीं जाना चाहिए।

क) यदि नम्रता उद्देश्य बन जाती है तो हम झूठी नम्रता के खतरे में हैं।

ख) यदि परमेश्वर की महिमा करना विधि बन जाता है तो हम आत्म-धर्मी और कर्मों द्वारा मुक्ति के खतरे में हैं।

टिप्पणियाँ -

ग) यदि ऊँचा होना विधि बन जाता है तो हम दिखावटी मसीहियत के खतरे में हैं।

घ) यदि नम्रता परिणाम होती है तो हम मसीहियत के खतरे में हैं।

१८) शिक्षा और मसीही जीवन में संतुलन विधि, परिणाम और उद्देश्य के बीच के अंतरों को परखने और अपने जीवन में लागू करने की हमारी क्षमता पर निर्भर करते हैं।

क) उदाहरण के लिए, क्रूस सुसमाचार की विधि है। पुनरुत्थान सुसमाचार का परिणाम है।

ख) पुनरुत्थान विधि नहीं हो सकता है। क्रूस परिणाम नहीं हो सकती।

व्याख्यात्मक प्रश्न

क्या पौलुस द्वारा मसीह के उदाहरण का फिलिप्पी वासियों के लिए कोई व्यावहारिक प्रभाव है?

१९) हाँ, एक व्यावहारिक निष्कर्ष या तात्पर्य है जिसे पद १२ में **"इसलिए हे"** शब्दों के साथ पेश किया गया है। इसी प्रकार मसीह के उदाहरण का अर्थ है कि फिलिप्पी वासियों को **डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार** का **"कार्य करना"** है (अंत तक इस प्रक्रिया में जारी रहते हुए)।"

व्याख्यात्मक प्रश्न

फिलिप्पी वासियों को अपने उद्धार का कार्य डरते और काँपते हुए क्यों करना चाहिए?

टिप्पणियाँ -

२०) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर पद १३ में **"क्योंकि"** शब्द के साथ देते हैं।

क) क्योंकि उनमें परमेश्वर हैं। वह कारण और परिणाम हैं। वह आदि और अंत हैं।

ख) उन्हें इस आत्मिक तथ्य से विस्मय (डरना और काँपना) होना चाहिए। उन्हें इस प्रक्रिया में इच्छुक बर्तनों के रूप में जारी रहना चाहिए और परमेश्वर इस प्रक्रिया में कारण और प्रवर्तक के रूप में जारी रहेंगे (देखें १:६)।

२१) इस समझ के साथ और इस समझ को लेकर कि पौलुस के लिए मसीही जीवन **ही** मसीह का जीवन है (१:२१; गला. २:२०), हम पौलुस के तात्पर्य को और अच्छी रीति से समझ सकते हैं।

क) पद ३-११ में दिया उदाहरण एक उदाहरण से अधिक है।

ख) यह इस बात का विवरण है कि क्या हुआ है, क्या हो रहा है, और उस कार्य के माध्यम से **उनका** क्या होगा जो परमेश्वर उनके जीवन में कर रहा है।

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप किसी अन्य की सेवा करने के लिए स्वयं को नीचा कर सकते हैं? क्या आप दूसरों को अधिमान्य दे सकते हैं? क्या आप हमेशा कलीसिया की किसी पंक्ति में पहला स्थान या सबसे अच्छी सीट पाने का प्रयास करते हैं? क्या आप एक व्यक्तिवादी जीवन शैली जीते हैं? क्या आप कहते हैं, "मैं अपना ध्यान रखूँगा और आप अपना ध्यान रख सकते हैं"? या आप परमेश्वर के परिवार को पहचानते हैं और परिवार में रहते हैं?

२) क्या आप उस चीज़ को पकड़ रहे हैं जिसके योग्य आप स्वयं को समझते हैं? क्या आप दूसरों के लिए अपने विशेषाधिकार का त्याग कर सकते हैं?

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

आपने अपने वेतन का एक-एक पैसा सप्ताह के ५० घंटे के लंबे काम के बाद अर्जित किया, परन्तु क्या आप वह सब पाने का अधिकार छोड़ सकते हैं? क्या आप स्वयं को चुनौती दे सकते हैं कि आप उस सब से न जुड़े ताकि आप दूसरों की सहायता कर सकें? हाँ, आपने मेडिकल स्कूल के १० वर्षों के लंबे समय के बाद समाज में एक स्थान अर्जित किया है, परन्तु क्या आप नियुक्त सेवा क्षेत्र में अपने कौशल का उपयोग करने के लिए हैसियत और धन का आत्मसमर्पण कर सकते हैं?

अपना उदाहरण डालें:

३) क्या आप मसीही जीवन को केवल परिणाम के रूप में देखते हैं? क्या आप केवल विजय स्वीकार करना चाहते हैं? या क्या आप समझते हैं कि उस परिणाम की कोई विधि है जो बहुत दर्दनाक हो सकती है? क्या आप क्रूस को स्वीकार करने में सक्षम हैं?

टिप्पणियाँ -

३. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) अंत में, पौलुस २:१४-१८ में अपनी शिक्षाप्रद चुनौतियों की ओर लौटते हैं । खंड के इस भाग की संरचना पिछले दो भागों की संरचना के समान है, जब उन्हें एक साथ रखा जाता है (आरेख देखें)।

क) उनके आचरण के संबंध में एक उपदेश।

ख) एक उदाहरण।

१:२७-२:१३	२:१४-१८
१) आचरण क) एकता ख) विरोद्ध के विरुद्ध खड़े होना	१) आचरण क) "बिना बड़बड़ाए या विवाद के" ख) "बीच में; ज़ोर से पकड़े हुए"
२) उदाहरण क) यीशु ख) उनके लिए तात्पर्य	२) उदाहरण क) पौलुस: "भले ही मैं" ख) "और आप भी"

व्याख्यात्मक प्रश्न

फिलिप्पी वासियों को सब कुछ "बिना कुड़कुड़ाए या बिना विवाद के" क्यों करना था?

२) पौलुस दो कारण बताते हैं। वह पद १५ में **"ताकि"** शब्द के साथ पहला कारण बताते हैं। वह पद १६ में **"कि"** शब्द के साथ दूसरा कारण बताते हैं ।

क) **"ताकि"** वे अपनी गवाही को शुद्ध और इसलिए प्रभावी रख सकें। ताकि वे परमेश्वर की संतान के रूप में देखे जा सकें जो शुद्ध और निर्दोष (अमिश्रित और पूर्ण रीति से समर्पित) हैं। अपनी पहचान के प्रति उनकी जिम्मेदारी थी।

ख) "**कि**" उनके साथ पौलुस का कार्य व्यर्थ न हो। अपनी विरासत के प्रति उनकी जिम्मेदारी थी।

टिप्पणियाँ -

३) हमें पद १७, १८ को उसके सामान्य संदर्भ में देखना चाहिए। पौलुस स्वयं को खाली कर रहे हैं,जैसा कि मसीह ने किया था। तात्पर्य यह है कि फिलिप्पी वासियों को भी ऐसा ही करना चाहिए। यह पद १२, १३ के तात्पर्य के अनुरूप है।

४) हमें इसे शिकायत न करने की शिक्षाप्रद चुनौती के तत्काल संदर्भ में भी देखना चाहिए। यदि पौलुस जिसकी मसीह की सेवा के लिए मारे जाने की संभावना थी, आनन्दित था, तो फिलिप्पी वासियों को और कितना अधिक आनन्दित होना चाहिए जो उस स्थिति में नहीं थे?

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप एकता से जुड़े रहते हैं? क्या आप सुसमाचार की गवाही के लिए शिकायतों और विवादों से बचते हैं? क्या आपके जीवन में, सुसमाचार की गवाही का महत्व आपके तर्कों, असहमतियों और असंतोषों के महत्व से अधिक है?

२) क्या आप अपनी विरासत पर कर्ज महसूस करते हैं? क्या आप उन लोगों के प्रति जिम्मेदारी महसूस करते हैं जिन्होंने आपको मसीह से मिलवाने के लिए क्लेश सहे हैं?

घ. खंड #४ की संरचना की रूपरेखा।

१. अपने आप को एक **"चाल-चलन"** (१:२७-३०) में संचालित करें।

क. **"चाल-चलन"** का उद्देश्य (पद २७क)।

ख. **"चाल-चलन"** की परिभाषा (पद २७ख,२८)।

१) एकता में दृढ़ रहें (पद २७ख-२७ग)।

२) विरोद्ध के विरुद्ध मजबूती से खड़े रहें (पद २७, २८)।

ग. **"चाल-चलन"** का सही ठहराया जाना (पद २९, ३०)।

१) उन्हें मसीह में विश्वास करना चाहिए (पद २९ख)।

२) उन्हें मसीह के लिए क्लेश सहना होगा (पद २९ग-३०)।

टिप्पणियाँ -

घ. **"चाल-चलन"** को प्रकट करने की चुनौती (२:१-४)।

१) यदि तुम्हारे पास है (पद १)।

२) फिर उसे करें (पद २)।

२. मसीह का **"रवैया"** रखें (२:३-१३)।

क. **"रवैये"** की परिभाषा (पद ३, ४)।

ख. यह **"रवैया"** रखें (पद ५)।

ग. **"रवैया"** का प्रकटीकरण (उदाहरण, दृष्टांत) (पद ६-११)।

१) विधि (पद ६-८)।

क) अधिकार त्यागने (पद ६, ७)।

ख) विनम्रता (पद ८क)।

ग) आज्ञाकारिता (पद ८ख)।

घ) मृत्यु (पद ८ग)।

२) परिणाम (पद ९-११)।

क) ऊँचा उठाना (पद ९क)।

ख) हर नाम से ऊपर का नाम (पद ९ख)।

(१) विशिष्ट परिणाम: घुटने टेंकना (पद १०)।

(२) विशिष्ट परिणाम: जीभ से अंगीकार करना (पद ११)।

३) तात्पर्य या निष्कर्ष (पद १२, १३)।

क) डरते और काँपते हुए अपने उद्धार पर काम करें (पद १२)।

ख) डरने का कारण: हम में परमेश्वर का विस्मय (पद १३)।

टिप्पणियाँ -

३. सब कुछ कुड़कुड़ाहट या विवाद के बिना करो (पद १४-१८)।

क. उद्देश्य (पद १५, १६)।

१) उनकी गवाही के लिए (पद १५)।

२) ताकि पौलुस का कार्य व्यर्थ न हो (पद १६)।

ख. पौलुस का उदाहरण (पद १७)।

ग. फिलिप्पी वासियों के लिए तात्पर्य (पद १८)।

लेखक की टिप्पणी:

रूपरेखा का उपयोग करना छात्रों को भागों (जारी रहना, सारांश, उदाहरण, उद्देश्य, परिभाषा, स्पष्टीकरण, निरंतरता, निष्कर्ष, तर्क, विधि, कारण और प्रभाव, विनिर्देश) के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

ङ. खंड #४ का निष्कर्ष।

१. सारांश वाक्य। यीशु मसीह के महान उदाहरण और हम में मसीह की समझ के प्रकाश में, हमें मसीही आचरण में आगे बढ़ना है जो कि सुसमाचार के योग्य है।

२. शीर्षक। शिक्षाप्रद चुनौतियाँ।